SPECIMENS OF BENGALI POETRY.

RAJORUSHNW MAY

The well known Poet and Demictist of

Author of the Randyana and Markette Frencher of the Vina Theatre The Great Tragio Coniedian of the day

WITH ENGLISH TRANSLATION AND NOTHIS

श्रशिक कवि ७ माउककात, यीना शिष्त्रितिय मः शांभक, স্থবিখ্যাত অভনেতা গ্রন্থাবদী প্রভৃতি প্রকেব বচরিছা, यूल द्वायांगन ७ यूल यहां छावट इत भनाम्यवानक শ্রীরাজকৃষ্ণ রায় প্রণীত।

[देःत्रां कि जस्वार्ग क निका महिक]

VINA PRESS.

87, Machua Bazar Street, Calcutta, PRINTED AND PUBLISHED BY SARACHCHANDRA DEVA. 1890.

[All Rights Reserved.]

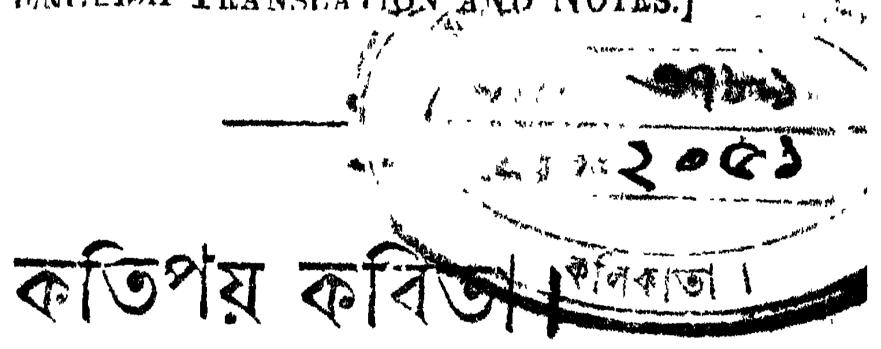
SPECIMENS OF BENGALI POETRY.

BY

RAJERISHNA RAY,

The well-known Poet and Dramatist of
Bengal, India;
Author of Grantharali in six volumes,
and other works;
Translator of the Romayana and Mahahharata.
Founder of the Vina Theatre;
The Great Trayio Comedian of the day.

[WITH ENGLISH TRANSLATION AND NOTES.]



[हेश्ता छ यस्ताम ७ निका महिन]

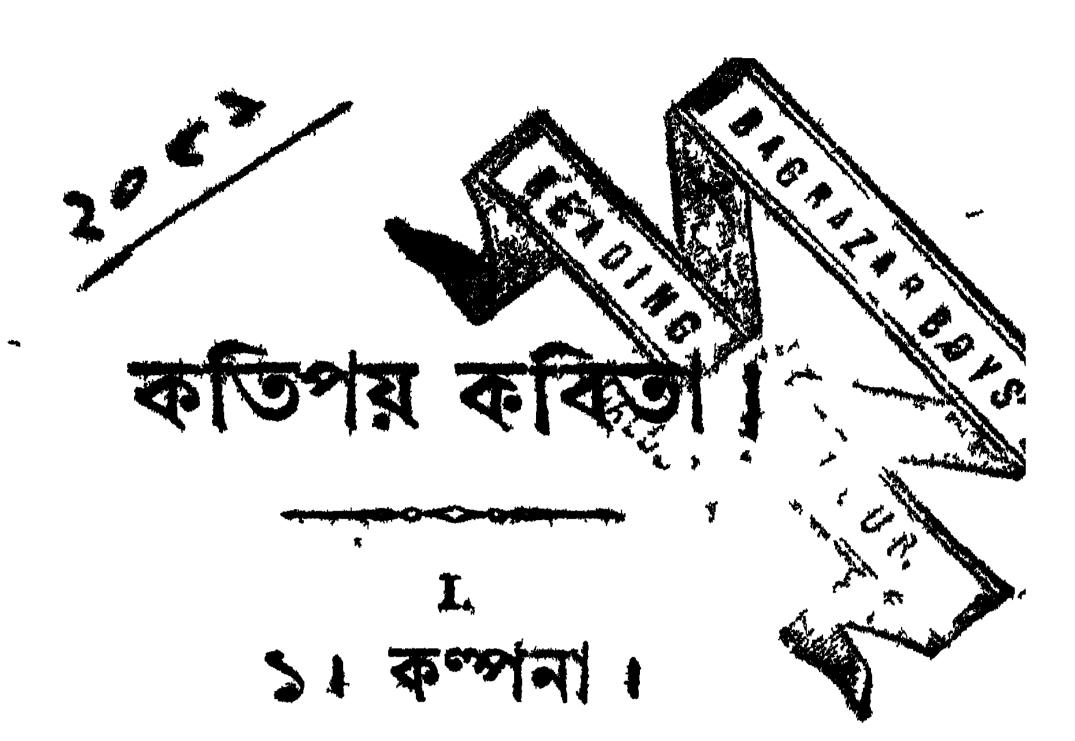
VINA PRESS,

27. Machua Razar Street, Calcutta,
PRINTED AND PUBLISHED RY

SARACHUHANDRA DEVA.

1890.

[All Rights Reserved.]



कृषिर कि वित भन, षुभिष्टे कवित्र धन, ख्रिके कि विस खान, पूर्थ, यम, वामना ; ज्ञिहे कवित क्षार, ज्ञिहे कवित क्षार, जुमिरे कवित, मुजि, सुधामुशी तमना, তুমিই কবির ভন্তী, षूभिरे कवित मजी ज्यिरे कवित कर्छ यश्यूला शर्मा; ज्यिहे कविन्न ताजा, ज्यिहे कविन कार्वा, তুमिरे कवित शून तांग, त्यांक, यांजना। क्ष विनिष्ठ दबबवरादम, क्ष विनिष्ठ कालिमादम, दक जिनिक वान्यीक्टित, हक जिनिक शापादत ? दक विनिष्ठ विश्वारम, दक विनिष्ठ कृष्टियारम, टक जिनिक नज एक टका, बाजना, जगाहत १ वीयूक्ण मश्कवि— सर्णत विष्णत ववि— क्रिया किया हिला भटत, दक हिल्ला का भटत ? टमक्लीत, चिन्हेटन, ३ १, काल्या सिट्न दक्र कि किनिक, स्परिक क अल्लामारित १

किन्द्र कि विजा

শালিও অমর কোন্তি, দেখা ত কি কোনাপতি,
শালী, শেলি, টালো, পোপ, কাউপার প্রাকৃতি
লাগিত কাহার মনে? কেই বা এ সব জনে
শারিত ?—ঢাকিত মন এত দিনে বিশ্বতি।
বরক্রচি, তবভূতি, হাফেজ পারস্ত-জ্যোতি,
ভারত, ঈশ্বর, মধু বঙ্গ-কবি প্রভৃতি,
টাদ কবি, জানদালে, ভারবি, তুলসিমানে,
রাখিত কি মনে গাঁথি' আজিও এ জগতী ?

II.

२। जीतन-त्रह्या

कान পড়িয়াছে বাঁধা, অন্তরে লেগেছে ধাধা,

वृक्षि वृक्षि कति, किस वृक्षिएस भाति नां ;

श्वीदान-श्वीदाना एटस संबू,

श्वीदान-श्वीदान नां या दर्भा

तररास्त्र कां हा साल-श्वीदास कानि नां।

कि अर्थ भारति कान्त्रदन

कि अर्थ भारति कान्त्रदन

कि अर्थ भारति कि श्वीदां।

भागाहत कुनानं क कि भारति।

के विन कि त्विष् का कि त्विष भागि ?

किश्व में किश्व में, अब ज्ञादमंत्र देवना ;

केशादमंत्र मुख द्वारम जात्र मुका गुरु मुका में देवना ।

क्रिंग यहिका—दन्य, मालामावि दवना ।

दिनात होता में कान, जात्र—दिन्य ज्वाम में दिन भोदन हैं दिल्ल —क्यन कि इत ;

करव जात—करव जात, व क्रि-त्रक्य-चात में विन में निव जामि ?—म्मितात नह ।

III.

७। शुक्रा-त्रश्मा।

চাহিরা দেখির, দেখির সমুখে,
শাখানে হৈরিছ যা'বর,
সেই সে নলিনী, নিজীব নলিনী
পড়িয়া একটি ধারেছ
ভৌতিক বিশ্লেষে পড়েছ ছ'লে খ'লে
দেহের গঠনগুলি;
জলে বিশে জল, অনলে অনল,
সুলায় মিশি'ছে ছুলি;

বাতানে বাতান, আকাশে আকাশ, পাঁচে পাঁচ গেল মিশে; চারি ধারে চাই, খুঁজিয়া না পাই,

শেষ না রহিল শেষে।

काथाय निनी?— काथाय निनी? काथा किছू य नाहे;

সব একাকার, নিবিড় জাঁধার, ফাঁকে ফাঁকে থালি চাই।

तिरे मभीत्। तिरे छ्डामन,

रगरे तिव, रगरे जल,

त्महे नीलामत, त्महे मनी, जातामल,

সেই তরু, লতা, ফল, ফুল, পাতা, সেই এই বস্মতী,

(मह (मह मित, एमह प्रिंच, कहे (म निनी मिछी ?

কতিপয় কবিতা।

IV.

8। कृटका मूत्रनी।

ক্ষণদা-সময়ে যশোদা-তনয়
সুঠামে দাঁড়া'য়ে যমুনা-তীরে,
আমারে বাজা'য়ে, স্বর মধুময়
ঢালিতেন নদী-পুলিন-নীরে।

?

আমারি গুণেতে খেলিতেন হরি গোকুলবাসিনী গোপিনী সনে; আমারি গুণেতে যমুনা-লহরী খেলিত তুলিত মুতুল স্বনে।

3

লাজ-ভয় ভুলি' হইয়ে আকুল, আমারি সরেতে এজের বাল আসিত ছুটিয়ে—এলাইত চুল— ছিড়িয়ে পড়িত মুকুতা-মালা 1

2

হরির অধরে অধর আমার স্থার স্থারে বাজিত যবে, দে রব পশিত শ্রবণে যাহার, স্থী বলি' তা'রে ঘুষিত সবে।

Œ

শামার স্বরের মাধুরী যেমন, তেমন মাধুরী আছে রে কা'র ? কাননবিহারী পশুপাখিগণ ভুলিত শুনিয়ে স্বর আমার।

1

এ রবে রবিত সমীর থামিত; উজানে বহিত যমুনা-জল; হরষে কুমুদী সরসে হাসিত; আকাশে হাসিত তারকাদল;

9

ভরু-শাখে ফুল-মুকুল ফুটিভ;
ফোটা ফুল ভূমে পড়িভ খিনি';
স্নীল-গগন-সাগরে ভাসিভ
রজভ-কুমল—উজল শশী।

কতিপয় কবিতা।

6

ৰ নবিহারিণী হরিণী নিচয়
ভয় ভুলি' ছাড়ি' কানন-বাস
ভানতে আসিত স্বর মধুমর,
ভাষারি গুণেতে শ্রামের পাশ।

2

নাচি' নাচি' মোরে বাজা'য়ে যখন
ভুলাইত কালা কামিনীকুলে;
সাজাইত তা'রা যতনে তখন
শ্রামেরে আমারে কামিনী-ফুলে!

5 0

বৈড়িয়ে শ্রামেরে ব্রজকুলবধূ
দাড়াইত যেন চাঁদের মালা!
ছড়াইয়ে শ্রাম মোর স্বর-মধু
বাড়াইত ভাবি-বিরহ-জালা।

55

শামি বাজিতাম, গোপীরা গাহিত,
ঘূরি' ঘূরি' ঘেরি' মাধবে সবে
ভানলয়ে কিবে মধুর নাচিত;
হায় রে, সে দিন আর কি হ'বে!

V.

०। देननाम शर्बद्र गर्शदिन्य।

কৈলাস গিরিবর, রাজত কলেবর,
দূর দূরন্তর আকাশভেদী;
পূত পবিত থল, হিম-জল ঝলমল,
যোগিবর শঙ্কর-বেদী।
শাঁখি চলে যত দূর, গিরিদেহ তত দূর,
ঘনগণ খেলে গিরি-কোলে;
উর্দ্ধে প্রভাত-রবি, রক্ত-বরণ-ছবি,
নিম্নে জলদদল দোলে।
ভৌধর তরুকুল, অগণিত ফল ফুল,
নধর অধরে লতা হাসে;
মধু-পরিমল-আশী, গুঞ্জন-স্কর-ভাষী,
অলিদল উড়ে ফুলপাশে।

নিবার বারবারি, বারে ভূধর'পরি,
লুটিপুটি তটিনী গড়ায়;
ঘাতজাত ফেনরাশি, ভাসিছে হাসি হাসি,
বুদুদ জনমি মিলায়।
নটননিপুণ বায়, তক্ল-পাশে ভিখ চায়,
দাতা তক্ল ঢালে ফুলরাশি;

পবন সে ফুল-ডালী, निर्वादत দেয় ঢালি, জলে চলে ফুলদল ভাগি।

की ठक-विंध भारत, वांग्रव त्वर् वांरक, *
भाशिभारथ পाशी करत गान:

সে তুহুঁ শবদ মিশি, ধাইল দশ দিশি, আর এক সুধামাখা তান।

ধ্যান-মগন হর, শার্দ্-ছাল'পর, লারা নিশি মুদিত নয়ান;

षाठल छेপরি যেন, দ্বিতীয় অচল হেন,

শঙ্কর অচল মহান্!

धमाशिक किष्कृते, निमाक्त निष्णे,

कर्षे करि कड़िक कुकक ;

লম্বিত হাড়মালা, লুন্ঠিত বাঘ-ছালা;

गम्पूर्थ एगक्र कत्रक ;

धवल-अठल-छन्न, अयुज नियूष जानू,

ভন্ম-বিলেপিত অঙ্গ;

छित्र कलकल, उछिलिए छल्डल,

शका-मिलन-विजन!

^{*} কীচক (বেউড় বাঁশ) বিঁধ (ছিদ্র) মধ্যে বায়ব (বায়ু-সম্বন্ধীয় বা বায়ুজনিত) বেগু (বাঁশী) বাজে।

VI.

৩। কে তৃষি।

5

কে, তুমি লতিকাকুঞ্জে বিসি' একাকিনী গুন্ গুন্ স্বরে গীত গাহিয়া আপন চিত করিতেছ পুলকিত, অয়ি সুহাসিনি ? কৌনেয় অঞ্চলে ফুল সঞ্চয় করিয়া, বিনিস্থতে গাঁথ মালা মন মিলাইয়া ?

₹

হা দেখ, সুন্দরি, আজি নেহারি' তোমায়,
চল বায়ু অন্য স্থলে
ভুলেও নাহিক চলে,
খেলা করি' তব পাশে লতিকা দোলায়।
শুমটে জগত-জীব আকুলিত মন,
তোমারি গোচরে খালি চলে সমীরণ।

S

জিয়া আইনু আমি বাগানে বাগানে, কোন খানে কোন ফুলে মুহূর্ড তরেও ডুলে না পাইনু জ্বাণলেশ ভূষিত পরাণে; তোমারি আঁচলভরা ফুলেই কেবল ছুটি'ছে সুরভিরাশি, মানন চঞ্চল।

8

কোপাও না দেখিলাম একটিও গাছে ফুটিতে একটি ফুল, বৃশ্বারিতে অলিকুল,

তব লতাকুজে শুধু ফুল ফুটে আছে। এখানেই ফুলে ফুলে অলিকুল মেলি' মুদ্ধমন্দ গুজারণে করিতেছে কেলি।

Ø

পাপিয়া, কোকিল, শ্যামা, হায় রে, কোথাও শ্রবণ-বিবরে মম না বর্ষিল স্থানম কৃষ্ণন, উড়িল নাহি হইয়া উধাও। এই কুঞ্জে তব পাশে, স্বায়ি বরাননে। যেখানের যত পাথী মঞ্জি'ছে কুষ্ণনে।

*

ুকা'র তবে গাঁথ হার ? কে তুমি, রূপসি ? কা'র কণ্ঠ সাজাইতে বাসনা ক'রেছ চিতে ? কা'র তরে কুঞ্জে ভব শোতে মুখননী ? আশারে দিভাগ করি কাহার কারণে এক ভাগে গাঁথ ফুল—অন্য ভাগ মনে ?

9

তুলি'ছ—কেলি'ছ ফুল—তুলি'ছ আবার; হে সুন্দরি, কা'র ছবি অন্তর-ফলকে ভাবি'

গেঁথেও—হয় না গাঁথা মনোমত হার ? যে ক'রেছে অধিকার তোমার হৃদয়, সেই বুঝি বলিতেছে,—'মালা ভাল নয় ?'

b

সেমদি প্রকৃত প্রেমী—তবে কি কারণ তোমার মালিকা নিতে বাসনা করি'ছে চিতে,

তোমার সরল চিতে থাকিয়া এখন ?
সে বদি তোমায় ছাড়ি' এই মালা লয়,
তা' ছ'লে নিশ্চয় জেন'—সে তোমার নয়।

2

ভোষারে ছাড়িয়া যা'র বাসনা মালাম, বল দেখি ভবে মোরে, সে ভব কেমন ক'রে? তা'র ভালরালা কই নিবলে ভোমায় ?

সে যদি প্রকৃত প্রেমী— দে যদি ভোমার,
ভবে লে ছাড়ুক আশা এ ফুল-মালার।

50

বুঝেছি ভোমার মন, হে সুন্দরি বালা!
ভূমি বড় স্কুচতুরা,
প্রেমিক-পরীক্ষা করা
উদ্দেশ্য ভোমার, তাই গাঁথিতেছ মালা।
মনোমত করি' কুল করহ গ্রন্থন,
পরীখ ভোমার সেই প্রেমিক কেমন।

VII.

१। शाद्य श्राञ्

নাই কো রাতি, নিবিয়ে বাতি, উষা সতী এলো।
মলিনমুখে, মনের ছখে, আঁধার চোলে গোলো॥
স্থিমামা, রাঙা জামা, পোর্লো টেনে গায়।
রাঙা চোকে, থেকে থেকে, পাহাড়পানে চায়॥
এমন কালে, তমাল-ডালে, ডাক্লো কোকিলদল।
পালক নেডে, ফেল্চে ঝেডে, নিশির শিশির-জল

टोकत-ভरम, सूरकांश शिर्म. (थर्म कारशत शाल k कू लित वधू, क्यां प्तत वँधू, ছে ए ज्ञाकाल दिला। षान्दन गा, टोल्ट भा, टाल्ट ठांदनत दमला॥ वो-कथा-क भाशी वटन,—" ७ की कथा क।" व्याम्छ। भूटल, मूथ्छि जूटल, त्वो दशका थ॥ कू तत वाला, व दि। थाला, माञ्ड क हल घाटि। मूथि (इंछ, চाপ ए पिछ, कि वा চলে মাঠে। किं वा চल, इटल घूल, कल्गी निया कांका। क्टि वा कता. व्यास्ट एता. एयंटी वए शांकि॥ ভাড়াতাড়ি, ছড়াহাঁড়ী, গিন্নী নিয়ে করে। গোবর গুলে, ফেল্চে ঢেলে, বাড়ীর উঠোন ভোরে॥ আমের পাতা, ভূতোয় গাথা, হাত খানেকের নল ৮ इं कांग्र मिट्य, टाक वूकित्य, छोन्ट वूट्यंत मन॥ व्याकिम-कार्यारे, नजून कात्रारे, मकाल হোলো দেখে। बादव कि ना, ভाव्द नाना, शां कि शांत दर्भ ॥ नाद्य दवें। बड़ (ठैंहों, कांद्र्द कतियांना। (क्यम काद्र शियात जद्र, किन्द्र जद्र लागा ?॥ य। इश इ'टव, इट्स या'टव, जात्दव धादत कांक। छ। वादन कि, शादनत शादन, ছाড़्ट भादत बाक १। लाहल काँट्स, जंत्रल छासा, वलम (यांड्रा एक्ट्र) ट्याल्ट यार्ट, ट्याय्ट लाखल, खड़्य-(याया एएए ॥

ताथान ছেলে, थেলে थिल, जाफिएय চলে গর । भीत नमीदत, बाफ्ट भीदत, শিশিরমাথা তর ॥*

VIII.

७। यात्रा मदत्रावत्।

शांदित পार्य धकि भूकृत, कांकहकू कल। भागरकोड़ी दूव एक करल, जाग्रह शांदित पल।।

^{*} Reproduced from Babu Rajkrishna Ray's very popular book Ghorar Dim. "The merit lies in the descriptive power displayed in it. Indeed, the realistic tone and appearance of Ghorar Dim is something like a novelty in Bengali peetry, which generally deals either with morbid sentimentalism or with material world very different from that which we see around us. Such appre ciation of the every day world is seldom shown by Bengali authors, and a habit of observation which Bengalis as a nation do not possess but the cultivation of which is absolutely necessary for the purpose of new civilisation which they must now accept. Ghorar Dim, though a small thing, possesses great value. It is written in a spirit which we hope and trust will become general among Bengali authors."

[:] The Calcutta Review. July 1831.

शला-क्रत्ल वालि चाल. श्रीच पत्रिकात। छ ए भाए जात्नत गांक, नीटि चांदमत सांक ॥ টাপা, চাটিম, কানাই-বাঁশী, রামরস্থা তরু। कांक्र कला भाक (धारतिह, कांक्र कला जक्र ॥ শেয়াকুলের কাঁটা ঝাড়, পাকা শেয়াকুল। कान्यादन वा दशल्प भाता भियालकां जात कुल।। कान्यादन वा वावला गाटक वितिरस आटक आठे। कान्थारन वा राँठाश शाँठा, विविद्य कूटलत काँछ। ॥ त्मरे भूकुरत, थीरत थीरत, नकत भिरय ७८ल। शक था शूर्य, गांत्रकाथाना जिजिए नितन जला। कां कला कारत, भिष्ठे । कारत, थरत नित्न कल ब्रुवल भार्य आवात यन (भरल विश्वन बल।। घाटि উঠে বকুল তলায় বোসে খানিক কণ कि ভাব্তে লাগ্লো নফর হয়ে অচল মন ॥

এমন্ সময় একটি বুড়ী,
মাথায় কোরে শাকের ঝুড়ী,
হাতে কোরে ভাঙা নড়ী, এলো পুকুর-ঘাটে।
ময়লা-মোটা-কাপড়-পরা,
পাকা চুলে উকুনভরা,
হাড় জিল্জিল্, চাম্ড়া-সারা, ভাত নাইকো পেটে

वाटिख तुड़ी तिरम कटन, शंज वां फिर्स कल्मी (जांता, नकत তাকে ডেকে বলে, ''কার পুকুর গো এটা ?" "अंधल वावूत" तुड़ी वरल ; नकत वदल, "त्म कात इंहरल ?" वुड़ी वटल. "डाक्माइटि भड़ेल निट्डत दवें।।। কত যে তার হাতী, খোড়া, কত যে তার টাকার তোড়া কত দে তার পান্ধী, গাড়ী, নাইকো হিসেব তার। কত যে তা'র লোণা দানা, वाग दाशिट वालायाना. हिस्तिथाना, नवदर्थाना, मिलाहे, लाहेक कात ॥ नकानदनां, नदकादनां. ঘোড়দৌডের বাজীখেলা. लाशाय वायू जे ७ फिरशत भार्छ। এক একটা পাগ্লা ঘোড়া. त्गियांत क्टल लागाय छाए।, निक्खानिक विषयिनित शहि। পর্শু আমি ওই দিকেতে, मद्यादिला घदत याज,

बाहेल वावृत अकछै। ছाना (घाड़ा।

वाभात मिटक छूटि এলে, ठाँ भिट्ट पाट्स कार्य, गाँठे सूटलट यन भाका कांडा ॥

IX.

३। जाखारल।

মস্ত ফটক, রঙের চটক, আস্তাবলের গায়।
গাড়ীখানা, ঘোড়াখানা, সারি সারি তায়।
খাটিয়া পেতে, নেসায় মেতে, সহিস্ কচুমান্।
ক্যাকোর বাজিয়ে সারঙ্ ছাড়চে নাকী তান্।
কেউ বা বলে, দিচে ডোলে, তেজী ঘোড়ার গা।
কোঁকের কাছে হাতটা গেলে, ছুড়চে ঘোড়া পা।
ছই দিকে ছই খোঁটা গাড়া, মানখানেতে ঘোড়া।
খোঁটায় বাঁধা মোটা দড়া ঘোড়ার মুখে জোড়া।
কেউ বা জলে চেরেট, বগী, ফিটন্ গাড়ী ধোয়।
কেউ বা খেটে, দড়ার খাটে আশ্ মিটিযে শোয়। গা

^{*} Reproduced from the Ghorar Dim.

⁺ Ditto.

X.

५०। धर्मामकी ५।

> ।—শিবস্তব। ¹.

রাগিণী—তিলক-কামদ। তাল–চোতাল।

ভঙ্গ রে মন, ভূতনাথ ভব ভবভয়বারণং। আদিদেব শূলপাণি ত্রিপুরাস্থরমারণং।

> পরিহিত রুড় বাঘছাল, লটপট জটজুটজাল, কালরূপ কাল-কাল,

ব্যাল-মাল-ধারণং।।
জ্বলিত জ্বলন চক্রভাল,
লোকনাথ লোকপাল,
দীনশরণ শিব দয়াল,

সকল কলুষহারণং।। কসিত রজত জিনিত কপ, গজাধর ভূপ-ভূপ, গীতরসিক ভজিকুপ,

তিরমঙ্গলকারণং।। ডিমি ডিমি যন ডমরু-বোল, শৃঙ্গনাদ ঘোর রোল,

কতিপয় কবিতা।

₹•

भाव-भिनिज नयन (मान, भाविकजनवात्रार।।

> ২।—বিষ্ণুস্তব। 2. (কীর্ত্তন)

(জয়) নন্দছলাল, ব্রজ-গোপাল,
ভূপ-ভূপাল হরি হে।
রুষ্ণচন্দ্র, চন্দ্রবদন, ভবসাগরতরী হে॥
রাধিকা-হৃদি-বিহারী শ্রাম,
বংশিধারী বৃদ্ধিম ঠাম,
ফুল্ল-বস্ত-কুস্থম-দাম,
পাত্রি-পাপহারী হে।।

পতিকি-পাপহারী হে।।
মনোমোহন, বাঁকা-নয়ন, গোপিনীগণরঞ্জন,
চাক্ল-পীত-ধড়া, বাঁকা-শিখিচ্ডা,

ভীতচিতভয়ভঞ্জন;— দৈত্যবিজয়ী হ্নষীকেশ, চন্দনমাখা মোহন-বেশ, গোবর্জনধর পরেশ, রন্দাবিপিনচারী হে।।

0। -किनिस्त । 3.

রাণিণী—ভৈরবী। তাল—ঠুংরি।
জয় চণ্ডবিনাশিনি, মুণ্ডনিপাতিনি,
নুমুণ্ডমালিনি কালিকে!
জয় ভক্তিবিধায়িনি, মুক্তিপ্রদায়িনি,
দীপ্তহুতাশনভালিকে!
জয় পর্পরধারিণি, কর্পরমালিনি,
শঙ্করমানসমোহিকে!
জয় চিন্ময়রূপিণি, বিদ্ববিনাশিনি,

XI.

ज्जुकरम खंडमाशिक !

১১। প্রকৃতিসজীত।

> 1—ঊষা। 1

রাগিণী—ললিত। তাল কাওয়ালি।
অনাথিনী নিশীথিনী থায়।
পূরব ছুয়ারে, আলোক-আঁথারে,
ধীরে ধীরে উষা চায়।।
অযুত পাখী,
মেলিয়ে আঁথি,

স্বরে সুধা মাখি' মঙ্গল গায়।।

জলন্ত হীর। অনন্ত তার। নিবন্ত পারা

গগন-গায়;—

क्रूप्य-वन्त, क्रूप्री अक्ष, यध्व शक्ष

कभल विलाय ॥

২।-প্রভাত। 2

রাগিনী—রামকেলী। তাল—মধ্যমান।
নব বিভা রবি ঢালি'ছে গগনে।
হইল শোভাময় তড়াগ
বিকচ পদ্মদলে,
তা হ'তে বহে সৌরভ চল-পবনে।
ফুল-মধু-পান-বিভোর দ্বিরেক,
বিকসিত সুর্যমুখী—
মেখমালা শোভে রবি-কিরণে
উক্ল লাল বরণে।।

৩ | — সন্ধ্যা | 3.

রানিণী—গোরী। তাল—আড়াঠেকা।

দিবাকর দিবা শাসি পশিল জলধি-জলে।

সন্ধান সমুদিল আসি বিশাল ধরণীতলে।।

সুনীল গগন শোভে হীরকের পুঞে,
ভঞ্জরি মহেশ-গুণ ফিরিল অলি সকলে।।

কুমুদী চাঁদেরে হেরি প্রেমরস ভূঞে,
বিরহিণী সরোজিনী জলিল বিরহানলে।।

বাসর-বিহার তরে বসিয়ে নিকুঞে,
নায়িকা মঞ্জল মালা গাঁথিছে কুসুমদলে।।

কেহ বা ধঞ্জন—আঁখি অঞ্জনেতে রঞে,
ভমর বসিছে যেন বিশদ কচ কমলে।।

মুকুতা-গঞ্জিত চারু দশনেরে মঞে,
হৃদয়-রঞ্জন-পতি-হৃদয় রঞ্জিবে ব'লে।।

मन्त्र ।

TRANSLATION.

I.

IMAGINATION.

Thou art the poet's treasure; thou art the poet's pleasure; his mind, heart, time and aim. Thou art the poet's body, thou art his abode, thou art his nectarine tongue. Thou art the poet's lute, thou art the poet's guide, thou art the valued jewel of his throat. Thou art his kingdom, thou art his handi-work; thou art, again, his illness, grief and pains.

Who would have known Vedavyasa (1), and Kalidasa (2), and Valmiki (3), and Homer? who would have known Chandidasa (4), and Krittivasa (5), and Longfellow, and Byron, and Chaucer?

⁽¹⁾ The celebrated author of the PURANAS and the compiler of the VFDAS.

⁽²⁾ The well-known author of SAKUNTALA, and one of the nine genus in the court of Vikramaditya. (B. c. 57.)

⁽³⁾ The author of the RIMAYANA; the first writer of Sanskrit verse.

⁽⁴⁾ A Vaishnava Poet of Bengal. (Born in the 14th Century of the Christian era.)

⁽⁵⁾ The first translator of the RAMAVANA into Ben-guli, (16th Century)

Who would have known the great poet Mukunda (1)—Bengal's snining Sun—Shakespeare, and Milton, and Magha (2), and Bhattinarayana (3), if thou hadst not introduced them to the world?

Would even now have shone in their everlasting lustre Vidyapati (4), Sadi (5) Shelly, Tasso, Pope, and Cowper, and others? Who would have thought of them? The human mind would have by this time been covered with the veil of oblivion. Would the world have now held in fond remembrance the name, of Vararuchi (6), Bhavabhúti (7), Hafiz (8)—the light of Persia—Bharata (9), Isvara (10), Madhu (11), and other

⁽¹⁾ The author of the CHANDI, one of the carliest writers of Bengeli poetry. (15th Century).

⁽²⁾ A celebrated Smskrit Poet.

⁽³⁾ One of the five Britanins who settled in Bengal at the regrest of king Adisma; author of "Veni-Samhara"—a Sanskrit drama based on some of the incidents of the Kurukshetra War.

⁽⁴⁾ A Lyric Poet of Behar describing the loves of Radha and Krishna. (14th Century).

⁽⁵⁾ A Persian Poet,

⁽⁶⁾ A Smokrit Poet.

⁽⁷⁾ Author of "Uttara-Rama-Charita", a Sanskrit drama describing the exile of Sita.

⁽⁸⁾ A Persian Part of great celebrity.

⁽⁹⁾ A Bengali Poet—author of Annadamangal (18th

⁽¹⁰⁾ A Bangali Poet—one of the earliest Editors of Bengali newspapers, (Born 1809)

⁽¹¹⁾ Michael Madhusudan Dutt-A Benguli Poet of

poets of Bengal, Chànd (I), and Juanadasa (2), Bharavi (3) and Tulsidasa. (4)?

II. THE PROBLEM OF LIFE.

Reason is taken prisoner, the mind is distracted with doubts—I try to understand but fail. The door of mystery is about to open, but does not—I know not how to do so!

A veil of glamour—a kind of shadow flits by—a mirage plays before the eye, and, O wonderful, it deceives illusion itself!

What have I understood all this time? O nothing, nothing—it is all the work of Ignorance. I have cone aled Life in the dark folds of Ignorance, and float d Life's bark on the sea of Tim. Pull up the cartain—and log the shore is still half-way off. Oh, I have let slip the opportunity of learning—the line of Life is disappearing by degrees. I know not what is going to happen. O when,—O when shall I open the portals of that mazy mystery—Alas! they defy all attempts at opening.

⁽Born 1828).

⁽¹⁾ A writer of heroic odes of Rajputana.

⁽²⁾ A Vaishriaya Poet.

⁽³⁾ A Sanskrit Poet.

⁽⁴⁾ Author of Hindi RAMAYANA and Hindi moral Stanzas.

III.

THE PROBLEM OF DEATH.

TO NALINI (A BELOVED LADY).

I looked and found before me on the dismal cre mation grounds, my NALINI - my lifeless NALINI lying on one side. By the law of Nature's analy sis, the component parts of the body are dropping away, one by one. Water flies to water, fire to fire, earth to earth, air to air, and ether to ether -the five elements flying up to their own. I looked on all sides and saw nothing lagging be hind. Where is my NALINLY Owhere 1-No trace can I find of her-ull, all is chaos-I gaze only at vacuum. The same gust of wind, the sume blaze of fire, the same glare of the Sun, the same ocean, the same blue sky, the same dark clouds, the same Moon and stars, the same trees and creepers, the same fruits, flowers, and leaves, the same wide world—all, all are there, but where, O where, is my NALINI pure ?

1V.

KRISIINA'S FLUTE.

As fall of night, Yasoda's (1) son
Would take his stand on Yum'na's (2) shore,

⁽¹⁾ Foster-mother of Krishna.

⁽²⁾ The River Jumna.

And homsed sound would pour on hank Of Yum'na blue while play'ng on me.

- 2 It was on strength of mine sweet planks
 He played with milk maids of Goding (I
 It was on strongth of none the waves
 Of Tumba would melodious dance
- Beieft of scuse of shanc and fear,
 To Yum has hore their han dishevelled,
 Then pearly garlands all unstrung.
- 4. When Krishur ships did hight on mine, What melting music hil come firth the All men and buds and beasts who he aid Were thought on earth most blessed soul.
- With what, tell me, could your forth.

 The leasts of wood, the birds of sir,
 Wore charmed, entranced, enraptured all.
 - The notes would still the noisy win i.

 The Yum in flow in bankward move.

 The Kumud (3 smile in lovely takes

 The stars would laugh in apure blue.

⁽¹⁾ The place where Kushner as brod

^{• (2)} Another nam of Brindavan—the - rm of Kine na's carly life

⁽¹⁾ An escu at his untolding its jetal at nort t

- 7. The buds would ope on towering trees,
 The full-blown flowers drop on earth,
 Would float on bluish sea-like sky
 The lovely lily—shining Moon!
- 8. It was my dulcet notes would bring
 The dauntless deer from out their haunts,
 And make them stand at Krishna's side,
 And drink celestial music rare.
- When dancing to the sound of mine
 Did Krishna charm the fair away,
 They decked myself and him with care
 With fragrant flow'rs from kamini (1) trees.
- 10. When Braja's maids would stand round Shyam(2)
 Like necklace made of shining moons;
 Then Shyam would throw my notes all round,
 Thus adding to their future pangs.
- 11. Myself would sound, while they would sing, And dancing circle him about With graceful steps and measured, sweet. Would such days, (), come back again!

⁽¹⁾ A tree bearing fragrant flowers in clusters.

⁽²⁾ Another name of Krishna.

V.

MAHADEVA (1) ON MOUNT KAILASA. (2)

On Kailasa's top of a silvery hue, that pierces far into distant skies, and drenched in snowy waters pure—most sacred site—lies the seat of meditative Mahadeva. The body of the mountain spreads over all visible space—the clouds dance about its lap. Up rises the juvenile Sun—the picture of red—down swing the deep dark clouds. Laugh the mountain-trees in all their glory of flowers and fruits, and tender creepers follow suit; while fly the honey-tongued bees about in search of sweet.

Dashes the cascade against the mount, and rivers meandering flow; while float the foams in silvery smiles, and bubbles born to die. The dancing wind begs flowers of trees, which, taken, are given to fount again, whence borne are they on watery wings. The wind within the bamboo-rifts plays a kind of flute, while birds on trees doth dulcet music sing. The charming notes combine and raise a symphony new !

Scated on a tiger's skin, with eyes closed all alght long, wrapped in meditation deep, behold Sankara (3) sage, even as a mount on mount!

^{* (1)} The 'Destroyer' of the Hinda Triad,

⁽²⁾ A peak of the Himalayas.

⁽³⁾ Another name of Mahadeva.

His matted locks are all in disarray, dangling on the ground below, and encircled over with veno mons anakes. Hangs over his breast a garland of bones and flows by his side his tiger-skin garb Lie before him his bowl and drum. His body, white as the mount, is beamcared with ashes, and shines with the sheen of a myriad suns; while murmuring music marks the escape of Ganga (I) pure o'er his tangled hairs

VI.

WHO ART THOU?

- I Who art thou, O lady sweet, that mur murest music in you lonely grove and fillest thy heart with exquisite joy,—that cullest flowers in thy silken robes, and, with attention deep, makest a garland without the aid of threads?
- Behold, O lady fair, the restless wind has taken his stand by thee, and moves the creepers to and fro, while world at large does caseless grow for want of balmy breeze;
- Royal have I in gardens many, but no where for a moment's time, could my eager nose catch a breath of scented sweet—for all the scents on earth concentrated are in the wreath of flowers that thy silken robe contains.

⁽¹⁾ The sacred river-one of the wives of Manager, a hom he presurres on his head.

- 4. I found nowhere a single flower opening itself on a single tree, nor could I hear a single bee buzzing his joys about. Thy grove alone bears all the fragrant flowers, and here alone all buzzing bees dance on.
- 5. My ears caught not the notes of Papiya(1) weet, nor Kokila's (2) coo, nor Shama's (3) song But here, O lady fair, all Nature's bards combine to sing most ravishing tunes.
- 6. Who art thou, my lady sweet a For whom weav'st thou the fairest wreath a Whose neck dost thou intend to deck therewith? For whom thy moon like face adorns this grove a For whom hast thou cleft thy Hope in two—the one being wrapped in weaving, the other in thee?
- 7. Whose likeness doest thou paint on mind's cauvass?—Culling, and dropping, and culling again—does not the garland please thy heart? Says he who holds thy heart, "It is not as it should be"?
- 8. If he be a lover true, I know not why he should be wastful at all to have the wreath. Leaving thee, if chooses he to take the wreath. know this, sure, he isn't thine!
- have the wreath ignoring thee, does love for thee sway his heart at all? Give up all hopes he must for the wreath, if lover true he claims to be.

^{(1), (2), (3)} Indian birds of song.

10. I've found thee out—thou cunning fair !—to try his love is thine intent. Then weave on, gentle lady sweet, and try his love to thy heart's content.

VII.

A MORNING IN A VILLAGE.

The night is gone -- the light is out-now comes the dawn. Sorrowful darkness takes his leave. Uncle Sun(1) his crimson garb puts on and frowns on hills with blood red eyes. On Tamal (2) trees the Kokila sings and shakes the nightdew off his wings. The owl, whose face is round, and eyes are, pea-like, smail, resorts to lonely nocks to escape the teasing birds and abusing crows. The young wife leaves her bed and husband dear, and walks with lazy legs-a moving Moon! The Bow katha kao" (3) bi:d whispers on - "speak on, my wifey dear!" The young wife lifts her veil and face and looks as if struck damb. The busy house wife goes to the Ghunt (4) to wash the plates unclean—while others hie to fields close by, with down-cast faces fair. Some others take the water pots to water fetch from pond, while

 $\int_{0}^{\infty} dt$

⁽¹⁾ The Sun is popularly so called in Bengal.

⁽²⁾ Xanthoxymus pectorius.

⁽³⁾ A little bird whose cry sounds like Bow-katha-

⁽⁴⁾ The steps to a pond,

others down the pond move slow, avoiding muddy ground. The matron runs with liquid dung (1) to scatter o'er the yard. The elder men with fullclosed eyes, smoke through pipes of mango-leaves, The new son in-law, at break of morn, thinks if he should stay away; for his office Sahib is a very cross man and is sure to cut his day. How then could be purchase gold for the use of his dear wife?—Let come what may, he would stay away. and buy the gold on tick! With what heart could he leave his wife—the wife, his heart of hearts? The simple rustic, plough on shoulder, drives the bullock pair, on to the field, which crops would yield—his smoke puffing away. The rustic boy, with playful steps, leads away his cows-the dew-clad trees, with gentle breeze, keep softly moving on.

VIII.

A VILLAGE POND.

The market place beyond, there lies a pond, of water clear like the eyes of crows;—where dive Pankauri birds and geese float on. The sand looks glistening beneath mid pond, so pure its water is. On its high banks the palm tree rises high, while plots of grass lie low. Plantain trees

⁽¹⁾ The Hindus sprinkle liquid cow dung in the morning as a purifying article.

Kanai-bansi(3) and Ram-rambha(4). Some plantains are about to ripe, some plantains are of alender shape. Here shrubs of thorny Sheyâkul (5) take some space; there peep the Seyèlkäntä's dowers of yellow tinge. Here the gum-giving Babla (6) stands—there is a goat bleating, chewing some thorny leaves. (7)

Into this very pond, with gentle steps, Nafar did descend. His hand and feet he washed in it and dipped his napkin too. With the palms of his hands, together joined, he drank some water well, and felt refreshed, and doubly strong his tired limbs became. Then got he up and sat he down beneath a Bokul (8) tree, and, mind un moved, he lost himself in one long wild reverie.

Now came a woman old, a vegetable basket on her head, a broken staff in hand. Her clothes were coarse and full of dirt, her hairs were full of lice. Her bones were shaky, her limbs all thin, her stomach wanting rice. Softly she bent her knee, and down she went the pond. With hands outstretched, some herbs she fetched when Nafar her addressed. "Whose pond", said he,

^{(1), (2), (3&#}x27;, (4) Varieties of the plantain (Musa Paralli-

⁽⁵⁾ A thorny shrub.

⁽⁶⁾ Acacia arabica.

⁽⁷⁾ Zizyphus jujuba.

⁽⁸⁾ Mimusops elengi.

"is this,"? "Atal Babu's", thus answered she. To which again—"whose son is he"?—"The son of woll-known Patal Sing. Who could count his elephant horse, Palankeens, carriages, and his purse? Who could count his wealth of gold, his aviary, gardens, mounted guard? He holds his horse-races, morn and eve, in you wide field, his restive horse would rider leave and drive all men to Baidyabati's (1) market-place. Before day last a colt came fast while I was walking home, and kicked at my leg and knocked me down, and made my poor bones ache."

IX.

THE STABLES.

The gates are high, the stables are painted bright. Carriages, horses are grouped in order right. Drivers and grooms, all drunk, would sit on bed. And nasal sing to tune of Sarang(2) sweet. Some fiery steeds they keep grooming with force, Who kick out wild, if touched on sensitive parts. Between two posts the horse is made to stand. To posts are fixed the ropes which bind his mouth.

⁽I) A village situated on the western coast of the Hughly, 16 miles north of Caloutta, the capital city of India.

⁽²⁾ A musical austrument of the stringed kind.

36

Some Buggy, Chariot, Phæton wash with water, While others, tired, lie down on string-made bed.

X.

RELIGIOUS SONGS.

1.—A HYMN TO SIVA. (1)

O worship him, the Lord of spirits,— Banisher of worldly fears, Primeval God, who trident holds And who has slain Tripura (2) bold;

Who wears round him the tiger-skin.
Whose matted locks all dangle wild;
Who's Time itself, destroy'r of Time,
Who wears the necklace of dry bones;

Who, Lord of men, protects all souls, The poor's refuge, the kind-hearted, Remover of all kinds of woe;

Who shines with hue of silver bright, Who bears the Gauga,—king of kings, Who's soul of music, well of faith,
The cause of good—all lasting good!

⁽¹⁾ Another name of Mahadeva.

⁽²⁾ A powerful demon killed by Mahadeva.

"Dimi Dimi Dimi" sounds forth his drum, His horn emits a shrilling blast. His rolling eyes half shut sits he, The saviour of sinful souls!

2.—A HYMN TO VISHNU. (1)

Hail! Braj's Gopal (2), Hail Nanda's (3) child! Hail! king of kings, Hail! Lord Hari (4)! Hail! Krishna Chand (5) of moon-like face! Hail! bark of wide world's ocean wild!

Thou holdest fast pure Radhà's (6) heart, Thou play'st on flute, thou bent ir shape, Thou deck'st thyself, in full-blown flow'rs, Destroy'r of sins and ills, thou art!

Of charming make, thou look'st askance, Thou, Gop'ni's (7) joy, wea'rst yellow garb, Hast crest of peacock o'er thy head, Remover thou of all hearts' dread!

⁽¹⁾ The "Preserver" of the Hindu Triad.

⁽²⁾ Gopal of Braja—Gopal is an endearing name of Krishna.

⁽³⁾ Foster-father of Krishna.

⁽⁴⁾ Another name of Krishna.

^{*(5)} Krishna Chandra—full name of Krishna. Chandra means the Moon.

⁽⁶⁾ The personification of the Female Energy. The most beloved of Krishna.

⁽⁷⁾ Gopinis-Milk-maids.

Thou dreadful Daityas (1) didst conquer, Thy limbs with sandal paste smell sweet, Govardhan (2) great didst lift with ease, Didst rove in sacred Brinda's groves. (3)

3.—A HYMN TO KALI. (4)

Brave Chand (5) and Mund (6) at thy hands fell, The skulls of slain form necklace thine, Thou fount of faith and salvation, Thy fore-head glows with flaming fire!

Begirt with skulls and skull in hand, How charmest thou sage Sankar's (7) heart! Intelligence's self heal'st thou all ills, And pour'st all bliss on faithful souls!

⁽¹⁾ Demons.

⁽²⁾ Krishna lifted up the Goverdhan mountain with the little finger of his left hand, and thus warded off the thunder and rain with which Brindavan had once been threatened.

⁽³⁾ The forest of Brindavan.

⁽⁴⁾ The consort of Mahadeva.

^{(5), (6)} Chanda and Munda, two of the generals of the Demon-kings whom Kali slew in war.

⁽⁷⁾ Another name of Mahadeva.

XI.

SONGS ON NATURE

1.—THE DAWN.

The widowed Night (4) retires.

At Eastern gate, through light and shade,
Peeps gently in fair Dawn.

Unnumbered birds their eyes ope out,
And tuneful sing auspicious notes,
Unnumbered stars, like Diamond sparks,
Now hide themselves in Heaven's blue vault.

Now fight of flow'rs comes on!

Kumud (1) doth close, while Kamal (2) blows,
And throws her fragrance wide.

2.—THE MORNING..

The Sun doth pour new glow on Heaven's expanse The waters smile with full-blown lilies fair, Whence breezes perfume bear.

The bee is lost in drinking flow'ry sweet; The sun-flow'r blooms in joy at sight of Sun; Gleam clouds in bright red light.

^{*(1)} In Indian Poetry, the Moon is the Lord of Night.

^{(2), (3)} The Kumud closes its petals at sun-rise, when the lotus unfolds its own. Poetically, Kumud is the object of the Moon's love, while the Kamal (lotus) is attached to the Sun.

3.—THE EVENING.

The Sun gives up his rule and dives in sea,
Now Evening comes and takes his place on earth.
On blue vault high shine Diamond clusters bright,
The bees hie home while humming hymn to heaven.

The sight of Moon fills Kumud's heart with love. While sinks with grief the lonely lotus poor. The damsel young now sits in arbour fine And wreathes a garland for her lover dear.

O'er Khanjan eyes(1)some kajjal(2) paint with care Which looks like black bee perched on lotus white;

Their pearl-like teeth some rub with perfumed paste,

That they might charm their dear lords' hearts away !

⁽¹⁾ Eyes like those of the KHANJAN, an Indian bird of the wag tail species, noted for the beauty of its eyes.

⁽²⁾ Collyrium, with which Indian ladies paint their eye-lids.